

हरिगंधा

साहित्यिक पत्रिका

अंक : 333, मार्च, 2022

द्वारा-ज्येष्ठ 2079

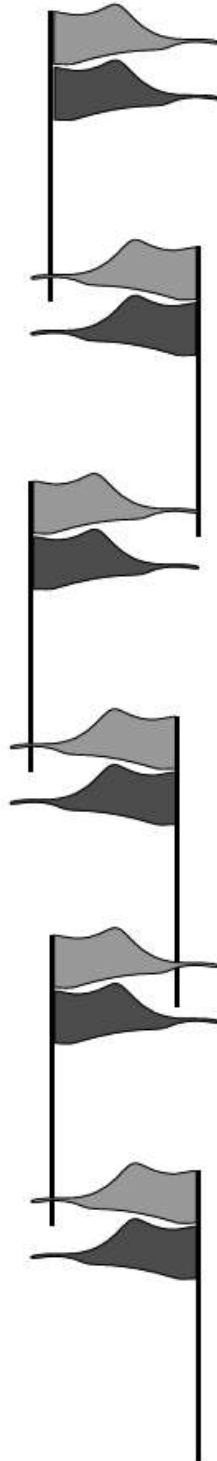


हरियाणा साहित्य अकादमी

मेरा गांव बदल रहा है

● वन्दना यादव

मेरा गांव बदल रहा है।
गलियों में अब धूल नहीं उड़ती,
वहाँ बच्चे अब काठ की गाड़ी नहीं चलाते
वो बाँसुरी बजाते हुए जो खिलौने वाला आता था,
आठ आने में दो खिलौने और
मुट्ठीभर गोलियाँ दे जाता था
गोल अठ्ठी का चलन जब से बंद हुआ है,
उसकी बाँसुरी भी बंद पड़ गई है।
भारी-भरकम पगड़ी वाला
सिर पर टोकरी लिए, मैले-कुचैले कपड़ों वाली
लाड़ में डूबी, वो मुस्कान अब नहीं आती।
हाँ, अब गलियों में धूल नहीं उड़ती,
यहाँ सड़क जो बिछ गई है।
धीरे-धीरे मेरा गांव बदल रहा है।
चूल्हा सुलगाते ही झुर्रियों वाली देह
मोहल्ले के सारे बच्चों को,
कंडों पर सिंकी गुड़-शक्कर और
सौंफ वाली, नर्म रोटी परोसती थी
लाड़ और घी से, थाली लबालब रहा करती थी।
अब वो तजुबेवाले झुर्रीदार चेहरे
गली-मोहल्ले में बाँटने को, मीठी रोटी नहीं बनाते।
लकड़ी और कंडों से उठता धूँआँ, कहीं खो गया है
घर-घर में गैस का चूल्हा जो आ गया है।
धीरे-धीरे मेरा गांव बदल रहा है।
सबसे बड़े पेड़ की ऊँची डाली पर चढ़कर
तालाब में छलांग लगाया करते थे।
एक सिरे से दूसरे सिरे तक और
एक ओर से दूसरी ओर तक
साथियों संग पानी की गहराई नापते थे
अब उस तालाब में बच्चे, गहराई नहीं खोजते।
सब पक्के मकानों में खुश रहते हैं
हाँए वो कच्चे मकानों वाले घर याद बहुत आते हैं।
मेरा गांव बदल गया है
मेरा गांव बदल गया है।



सम्पर्क : 8800606550

कोई दूर खड़ा हो

● सुरेश कुमार कौशिक

कोई दूर खड़ा हो, सहसा ही,
मन ही मन बिम्ब बनाता है।
सांसो की जब जब ड्योरी पर,
प्रणय का गीत उभरता है।
तब जीवन पथ में आ कोई,
नित अठखेली सी करता है।
कुछ बोल सके, ना तोल सके,
बस सोच सोच पछताता है।
कोई दूर खगा हो, सहसा ही,
मन ही मन बिम्ब बनाता है।
जीवन की इस पगडण्डी पर,
कभी आशा औ निराशा है।
कभी हास् हताश हुआमानस,
कभी पनपे पुण्य जिज्ञासा है।
कुछ खोया सा कुछ पाया सा,
अदभुत सा खेल तमाशा है।
कभी पतझरा पीगा झेलता है,
कभी राग बसन्ती गाता है।
कोई दूर खगा हो, सहसा ही,
मन ही मन बिम्ब बनाता है।
प्रण प्राण जगत के प्रांगण में,
ले सपन हजारो चलते है।
कुछ भाव निगोरे बिरले ही,
जीवन सांचों में ढलते हैं।
सुख दुख है अनुभव, अनुभूति,
साजन रे राह बदलते हैं।
कोई, शंसय सार सृष्टि को,
सच शोध साध अपनाता है।
कोई दूर खगा हो, स हसा ही,
मन ही मन बिम्ब बनाता है।
कोई दूर खगा हो, सहसा ही।

सम्पर्क : 465, सेक्टर- 10, फरीदाबाद